03051/2012 UGC Approved Sr.No.62759 Vidyawarta® April To June 2018 Issue-24, Vol-03 0167

319 9318
चोपड़ा के. जे. यूनीक बिब्लेटेरोन्स, सामान्य
करण मार्च, अप्रैल २०११. पृ.१५३
ingsley Davis and Hilda Hertz Golden
M. S. Gore, Urbanization and Family
s-46
ls Anderson and K. Ishwaran, Urban
1S
ैन, षष्ठी के.: नगरीय समाजशास्त्र: प्रथम
२७: ३०
पृ.३१
जोशी, हरीश चन्द्र एवं डॉ.चनियाल
विद्यावार्ता, अक्टूबर—दिसम्बर
पृ.३१३८
erunilam, Farncis-"Urbanisation in
ntries" Himalaya Publishing House
p no.26
nisation" www.questioa. Com on
esearcen
त्तराखण्ड में नगरीकरण एवं नगर
जैन, एस. रंजना एवं जैन, के षषी,
न, पृ.३३६—३३७
पृ.३३७
पृ.३३८
Updated sat. 05 Jan 2013,
एम. के. उद्यान अधिकारी कोटद्वार
न, एस. रंजना एवं जैन, के
ध्ययन, पृ.३४१
ख्या शिक्षा फर्स्ट एडीशन
बद्ध, पृ.२८—२९
उजाला में प्रकाशित लेख १२
.वहीं, जनगणना २०११
शी, हरीश चन्द्र एवं डॉ.
ावार्ता, अक्टूबर—दिसम्बर
३४२
डॉ संजीव भारत में
क परिवर्तन पृ.१३३
ी, हरीष चन्द्र एवं डॉ.
वार्ता, अक्टूबर—दिसम्बर

□□□

36

मोहन राकेश के नाटकों में मानवीय अस्मिता से जुड़े प्रश्नों की खोज

डॉ दिनेश श्रीवास,
सहा. प्राध्यापक (हिन्दी)
शास.ई.व्ही.पी.जी. महाविद्यालय, कोरबा (छ.ग.)

==============**********==============

सभी जीवधारियों में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, पाशविक प्रवृत्तियों को जीतकर मनुष्य ने सभ्यता और संस्कृति का निर्माण किया है। मनुष्य जीवन स्तर में लगातार वृद्धि करता रहा है। मनुष्य ने अपने कार्यों से स्वयं के गौरव को बढ़ाया है लेकिन इन सभी के अतिरिक्त प्रत्येक युग में मानवीय गौरव को चुनौतियाँ भी मिलती रही है।

एक ओर मनुष्य जहाँ मानवता के उच्चतम प्रतिमान गढ़ता जा रहा है, वहीं निम्नता की ओर कदम भी बढ़ा रहा है। कुछेक आजीवन मानवता से साक्षात्कार नहीं कर पाते हैं, तो कुछेक आजीवन मानवता को असंभव मानते हैं और कुछेक इनसे भी पृथक् केवल जीये जा रहे हैं। क्यों जी रहे हैं? किस लिए जी रहे हैं? पता नहीं है। इस प्रकार के लोगों की संख्या अधिक नहीं है, तो कम भी नहीं है। मनुष्य अपने सीमाओं से बंधा है। उत्थान—पतन स्वाभाविक है, किन्तु अपने अस्मिता को दबाकर केवल किसी भी तरह जी लेना उचित नहीं है।

क्षुद्रताओं से आबद्ध व्यक्तित्व से परिवार और समाज को हानि अवश्यंभावी है। इससे परिवार और समाज के अन्य लोग भी बाधित होते हैं। इन क्षुद्रताओं के विरेचन से ही व्यष्टि और समष्टि का कल्याण संभव है। इन क्षुद्रताओं का परिश्कार और विरेचन साहित्य के प्रयोगशाला में होता है। नैतिकता का बखान कर मानवता जगाना प्राचीन पद्धति समझा जाने लगा है। आज का साहित्यकार जीवन के उलझाव,

PRINCIPAL,
GOVT. ENGINEER VISHWESARRAIYA P.G. COLLEGE, KORBA
GOVT. E.V.P.G. COLLEGE KORBA